TEACHERS OF BIHAR

प्रकृति प्रहरी

LET'S GREEN BIHAR

प्रथम अंक
अप्रैल- जून 2026
त्रैमासिक ई- पत्रिका

विशेष आकर्षण

- बिहार में गौरैया का महत्व एवं संरक्षण की आवश्यकता
- इको क्लब फॉर मिशन लाइफ से जुड़ी कार्यविधि
- प्लास्टिक बनाम पॉलीथीन : नन्हें प्रहरियों की जंग

संदेश

प्रकृति बचाएं, भविष्य सुरक्षित करें

SCAN To Read

खंड :1 अंक :1

www.teachersofbihar.org/prakritiprahari

प्रकृति प्रहरी शपथ

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि
मैं धरती माता की रक्षा हेतु
एक सजग प्रकृति प्रहरी बनकर
कार्य करूँगा/करूँगी।
मैं वृक्षारोपण एवं संरक्षण करूँगा/करूँगी,
जल की प्रत्येक बूँद बचाऊँगा/बचाऊँगी,
प्लास्टिक का त्याग करूँगा/करूँगी तथा
कचरे का सही प्रबंधन अपनाऊँगा/अपनाऊँगी।
मैं जीव-जंतुओं के प्रति दयाभाव रखूँगा/रखूँगी
और ऊर्जा की बचत करूँगा/करूँगी।
मेरा उद्देश्य एक स्वच्छ, हरित और
सुरक्षित वातावरण का निर्माण करना है।
मैं संकल्प लेता/लेती हूँ कि
मेरे विचार और कार्य सदैव
पर्यावरण के अनुकूल होंगे।

कॉपीराइट सूचना

प्रकृति प्रहरी एक त्रैमासिक ई-शैक्षिक पत्रिका है, जिसका प्रकाशन टीम प्रकृति प्रहरी, टीचर्स ऑफ बिहार (Teachers of Bihar) द्वारा किया जाता है। इस पत्रिका का उद्देश्य पर्यावरण को सुरक्षा, उसके बचाव और बेहतर बनाने में किए जा रहे प्रयास से जुड़े अनुभवों, नवाचारों तथा प्रकृति के विभिन्न पहलुओं जिनका पर्यावरण के लिए आपका जानना आवश्यक है, को पाठकों तक पहुँचाना है तथा जमीनी स्तर पर प्रकृति प्रहरी तैयार करना है।

इस पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेख, कहानियाँ, चित्र तथा अन्य सामग्री के सर्वाधिकार संबंधित लेखक एवं प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं। टीचर्स ऑफ बिहार की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस पत्रिका के किसी भी भाग को किसी भी रूप में—जैसे इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य माध्यम से—पुनः प्रकाशित, संग्रहित या प्रसारित करना प्रतिबंधित है।

यह पत्रिका केवल पठन एवं शैक्षिक उद्देश्यों के लिए निःशुल्क उपलब्ध कराई गई है। इसका किसी भी प्रकार से व्यावसायिक उपयोग या विक्रय करना वर्जित है।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबंधित लेखक/रचनाकार के व्यक्तिगत विचार हैं। इनके लिए पूर्णतः लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं; इन विचारों से प्रकाशक या संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रकृति प्रहरी टीम

संरक्षक

महताब रहमानी
राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद

संपादक

अभिषेक कुमार
उ.म.वि. गोपालपुर नेउरा,
सैरया, मुजफ्फरपुर

सह संपादक

सिद्धांत जी
उ. मध्य विद्यालय ईटहरी
फुल्लीडुमर, बाँका

आराधना
उत्क्रमित मध्य विद्यालय अजीजपुर
सैरया, मुजफ्फरपुर

मार्गदर्शन एवं प्रेरणास्त्रोत

श्री शिव कुमार
फाउंडर
टीचर्स ऑफ बिहार

श्री शिवेंदु प्रकाश सुमन
टेक्निकल टीम लीडर
टीचर्स ऑफ बिहार

श्री केशव कुमार
इवेंट लीडर
टीचर्स ऑफ बिहार

प्रकृति प्रहरी टीम

डिजाइनिंग टीम

कुमार अभिषेक
उ. म. वि. सलेमपुर ढ़ाब
मुजफ्फरपुर

सुमित कुमार
प्राथमिक विद्यालय डारीडीह,
भभुआ, कैमूर

अमितेश कुमार
रा. बुनियादी विद्यालय रेपुरा
मुजफ्फरपुर

मनीष मणि
प्रा० वि० मुरा हरलोचनपुर,
सकरा, मुजफ्फरपुर

इशरत परवीन
उ. म. वि. मरवान खुर्द उर्दू
मुजफ्फरपुर

पप्पू कुमार पंकज
प्राथमिक विद्यालय अदलपुर
मुजफ्फरपुर

कंटेंट राइटिंग टीम

प्रिया कुमारी
उ० मध्य विद्यालय औराही,
गम्हरिया, मधेपुरा

स्वराक्षी स्वरा
मध्य विद्यालय हाजीपुर
आवासबोर्ड खगड़िया

मिथलेश कुमारी
उत्क्रमित मध्य विद्यालय डीह
गौरीहार, सकरा, मुजफ्फरपुर

ऋषिता
उ. म. वि. हरिहरपुर, भभुआ
कैमूर

अभिषेक जी
उत्क्रमित मध्य विद्यालय ,
धवपोखर, रामपुर , कैमूर

तारकेश्वर ठाकुर
प्रा० वि० हाजीपुर दक्षिण टोला,
शाहकुण्ड, भागलपुर

विकास कुमार साव
प्र० वि० चान्दोडीह,बेलहर
बांका

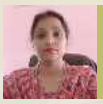
उर्मिला कुमारी
उ. मा. वि, चैता दक्षिण
उजियारपुर, समस्तीपुर

गौरव कुमार
रा० मध्य विद्यालय प्रेमजीवर
बहादुरपुर, दरभंगा।

पाठ शोधक

शोभा सिंह
कृत्यानंद मध्य विद्यालय
मलयपुर जमुई

ज्योति कुमारी
प्रा. शि. शिक्षा महाविद्यालय
पोखरैरा, मुजफ्फरपुर

डॉ स्नेहलता द्विवेदी
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय
शरीफगंज, कटिहार

मीडिया टीम

रंजेश कुमार
प्रदेश प्रवक्ता
टीचर्स ऑफ बिहार

मृत्युंजय कुमार
प्रदेश मीडिया संयोजक
टीचर्स ऑफ बिहार

कुमारी प्रेरणा
प्राथमिक विद्यालय भरतनगर,
गायघाट मुजफ्फरपुर

संपादक की कलम से

अनंतकाल से ही पृथ्वी पर मानव और प्रकृति में घनिष्ठ एवं अनिवार्य संबंध रहा है जहां जीवों के उद्भव एवं विकास के लिए प्रकृति जीवन का एक आधार है। मिट्टी, पानी, हवा और वनस्पति—इन्हीं तत्वों से हमारा अस्तित्व बना है। लेकिन आज विकास की अंधी दौड़ में हम यह भूल गए हैं कि प्रकृति के बिना मानव जीवन की कल्पना असंभव है। इसी विचार और संकल्प को स्वर देने के लिए 'प्रकृति प्रहरी' पत्रिका का यह प्रथम अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत है।

'प्रकृति प्रहरी' का मुख्य उद्देश्य समाज में, विशेषकर बच्चों और युवाओं में, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता जगाना है एवं हर उस अभियान को एक पहचान देना जो मानव और प्रकृति के संबध में सुदृढ़ करें। हमें यह समझना होगा कि पर्यावरण संरक्षण केवल एक अभियान नहीं, बल्कि एक जीवनशैली है, जिसे अपनाकर हम अपनी धरती को सुरक्षित रख सकते हैं।

इस अंक में हमने पर्यावरण संरक्षण के विभिन्न पहलुओं को समेटने का प्रयास किया है। हमारा मानना है कि यदि हर घर में एक पौधा लगाने का संकल्प लिया जाए और अपनी नदियों व तालाबों को स्वच्छ रखने का बीड़ा उठाया जाए, तो हम एक हरा-भरा और खुशहाल भविष्य गढ़ सकते हैं।

"**आओ मिलकर जल, जंतु और जीवन बचाएं**" क्योंकि आज का छोटा सा प्रयास कल की पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित संसार की नींव बनेगा।

आशा है कि **'प्रकृति प्रहरी'** का यह प्रयास आपको पसंद आएगा और आप प्रकृति प्रहरी के रूप में इस मुहिम का हिस्सा बनेंगे।

शुभकामनाओं सहित

संपादक

अभिषेक कुमार
उ.म.वि. गोपालपुर नेउरा,
सैरया, मुजफ्फरपुर

शुभकामना संदेश

राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी की कलम से

महताब रहमानी
राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद

"प्रकृति प्रहरी" त्रैमासिक ई-पत्रिका का प्रवेशांक अत्यंत सराहनीय, प्रेरणादायक शैक्षिक प्रयास है। वर्तमान समय में पर्यावरण से संबंधित विभिन्न चुनौतियों जैसे - ग्लोबल वार्मिंग, वैश्विक तापमान ने वृद्धि, ओजोन परत का झय ,जैव विविधता संकट, जलवायु परिवर्तन,कृषि पैटर्न में बदलाव,भू-जल स्तर में कमी इत्यादि देखने को मिल रहा है। इस जागरूक और संवेदनशील इंसान बनकर ही इन चुनौतियों का सामना किया जा सकता है। जरूरी है कि अपने उत्तरदायित्व को समझें और उसे निभाएं ।

"टीचर्स ऑफ बिहार" के द्वारा शुरू किया गया यह नवाचारी पहल " LET'S GREEN BIHAR" विद्यार्थियों ,शिक्षकों और समाज के सभी लोगों को प्रकृति के प्रति जागरूक और संवेदनशील बनाता है । यह ई - पत्रिका विद्यालय स्तर पर बच्चों और शिक्षकों द्वारा किए गए नवाचारी प्रयासों को समुचित मंच प्रदान करता है जो कि सराहनीय कार्य है।

मैं इस उत्कृष्ट एवं अनुकरणीय प्रयासों की भूरि - भूरि प्रशंसा करते हुए " प्रकृति प्रहरी " की पूरी टीम को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि "प्रकृति प्रहरी" अपने प्रयासों में पूर्णतः सफल होगा आपके प्रयास से समाज और राष्ट्र को प्रकृति के प्रति एक संवेदनशील, जागरूक और कर्तव्यनिष्ठ नागरिक प्राप्त हो सकेगा। हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

शुभकामना संदेश

R.D.D.E. (भागलपुर प्रमंडल) की कलम से

अहसन
क्षेत्रीय उप शिक्षा निदेशक
भगलपुर प्रमंडल

'प्रकृति प्रहरी' त्रैमासिक ई-पत्रिका के नवीन अंक के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई।

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि 'प्रकृति प्रहरी' त्रैमासिक ई-पत्रिका का नवीन अंक प्रकाशित होने जा रहा है। वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण न केवल एक जिम्मेदारी, बल्कि समय की सबसे बड़ी अनिवार्यता है। ऐसे में यह पत्रिका जनमानस में पारिस्थितिक चेतना जागृत करने का एक सशक्त और प्रभावी माध्यम सिद्ध होगी।

इस पत्रिका की सबसे सराहनीय विशेषता बिहार के सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा किए जा रहे जमीनी प्रयासों को रेखांकित करना है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'प्रकृति प्रहरी' भविष्य में भी पर्यावरण योद्धाओं के विचारों और नवाचारों को नई ऊंचाइयां प्रदान करती रहेगी और पर्यावरण चेतना का नवीन अध्याय बन कर उभरेगी। इस पुनीत कार्य के लिए मैं संपादक मंडल और समस्त टीम को उनके उत्कृष्ट परिश्रम हेतु हार्दिक बधाई देता हूँ और पत्रिका के

यशस्वी भविष्य की मंगलकामना करता हूँ।

डॉ रश्मि प्रभा मैम की कलम से

डॉ रश्मि प्रभा
पूर्व संयुक्त निदेशक एवं शिक्षाविद
SCERT बिहार

"प्रकृति प्रहरी" ई-पत्रिका का यह आरंभिक संस्करण एक नई सोच और सकारात्मक पहल का प्रतीक है। वर्तमान समय में जब पर्यावरण से जुड़ी चुनौतियाँ लगातार बढ़ रही हैं, तब शिक्षकों द्वारा इस तरह की पहल निश्चित रूप से समाज के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगी।

यह पत्रिका केवल जानकारी देने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और जिम्मेदारी का भाव भी विकसित करती है।

"Let's Green Bihar" के उद्देश्य को साकार करने की दिशा में यह एक प्रेरणादायक कदम है, जो आने वाले समय में हरित और सुरक्षित वातावरण के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

मैं इस सराहनीय प्रयास से जुड़े सभी शिक्षक साथियों, संपादकीय टीम एवं सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ। ईश्वर से प्रार्थना है कि "प्रकृति प्रहरी" इसी प्रकार निरंतर जन-जन में जागरूकता फैलाता रहे।

शुभकामना संदेश

डी.ई.ओ मुजफ्फरपुर की कलम से

श्री कुमार अरविंद सिन्हा
(बि.शि.से)
जिला शिक्षा पदाधिकारी,
मुजफ्फरपुर

"प्रकृति प्रहरी" त्रैमासिक शैक्षिक ई-पत्रिका का यह प्रवेशांक केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि पर्यावरण चेतना की एक सशक्त पहल है। ऐसे समय में जब पूरी दुनिया पर्यावरण संकट से जूझ रही है, बिहार के शिक्षकों का यह प्रयास सच में प्रेरणा का स्रोत है। यह पत्रिका ज्ञान और संवेदनशीलता का सुंदर संगम प्रस्तुत करती है।

इसमें शामिल विषय—गौरैया संरक्षण, वृक्षों का महत्व, प्लास्टिक उन्मूलन,पुनर्चक्रण एवं इको क्लब की गतिविधियाँ—न केवल प्रासंगिक हैं, बल्कि विद्यार्थियों को प्रकृति से जोड़ने का सशक्त माध्यम भी हैं।

विशेष रूप से बच्चों के नवाचार और उनके प्रयासों की कहानियाँ इस पत्रिका को जीवंत बनाती हैं। यह दर्शाता है कि हमारे विद्यार्थी केवल सीख ही नहीं रहे, बल्कि बदलाव के वाहक भी बन रहे हैं। "हरित बिहार, सुरक्षित भविष्य" के सपने को साकार करने की दिशा में यह पत्रिका एक महत्वपूर्ण कदम है, जो आने वाली पीढ़ियों को बेहतर, साफ़ और सुन्दर वातावरण मुहैया कराने के लिए ठोस कदम हैं|

मैं बिहार की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी Teachers of Bihar के सभी सदस्यों, संपादक मंडल एवं सहयोगी शिक्षकों को इस उत्कृष्ट पहल के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। आशा है कि "प्रकृति प्रहरी" आगे भी इसी प्रकार प्रकृति संरक्षण का संदेश जन-जन तक पहुँचाती रहेगी।

डी.पी.ओ मुजफ्फरपुर की कलम से

श्री सुजीत कुमार दास
जिला कार्यक्रम पदाधिकारी
बिहार शिक्षा परियोजना
मुजफ्फरपुर

"प्रकृति प्रहरी" त्रैमासिक शैक्षिक ई-पत्रिका का यह प्रवेशांक अत्यंत सराहनीय एवं प्रेरणादायी प्रयास है। आज के समय में जब पर्यावरण संरक्षण एक वैश्विक चुनौती बन चुका है, ऐसे में बिहार के शिक्षकों द्वारा इस प्रकार की पत्रिका का प्रकाशन न केवल जागरूकता फैलाने का कार्य करता है, बल्कि विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं समाज के अन्य वर्गों में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता भी विकसित करता है।

विशेष रूप से शिक्षकों एवं बच्चों द्वारा किए गए प्रयासों की कहानियाँ इस पत्रिका को और अधिक जीवंत एवं प्रभावी बनाती हैं। यह पहल निश्चित रूप से "Let's Green Bihar" के लक्ष्य को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

मैं इस उत्कृष्ट प्रयास के लिए बिहार की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी Teachers of Bihar के सभी सदस्यों, संपादक मंडल एवं सहयोगी शिक्षकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। आशा है कि "प्रकृति प्रहरी" पत्रिका भविष्य में भी इसी प्रकार पर्यावरण संरक्षण के प्रति समाज को जागरूक एवं प्रेरित करती रहेगी।

समीक्षा कॉर्नर

अनुक्रमणिका

क्र० सं०	विषय		पृष्ठ क्र०
1	गौरैया: महत्व एवं संरक्षण	CLICK HERE	1-2
2	पेड़- पौधों की दुनिया	CLICK HERE	3-5
3	एक दिन बिना बिजली	CLICK HERE	6-7
4	इको फ्रेंडली विद्यालय	CLICK HERE	8-10
5	पर्यावरण नायक	CLICK HERE	11-12
6	पर्यावरण बनाम पॉलीथिन	CLICK HERE	13-14
7	प्लास्टिक मुक्त अभियान	CLICK HERE	15-16
8	इको क्लब फॉर मिशन लाइफ	CLICK HERE	17-18
9	बदलाव की एक सजीव कहानी	CLICK HERE	19-20
10	प्रकृति प्रेमी काव्य संग्रह	CLICK HERE	21-23
11	जैविक खेती प्रयोग एवं अवसर	CLICK HERE	24-25
12	नन्हे प्रकृति प्रहरी	CLICK HERE	26-27
13	बिहार सरकार की योजना	CLICK HERE	28-29
14	महत्वपूर्ण दिवस	CLICK HERE	30
15	क्विज	CLICK HERE	31

गौरैया: महत्व एवं संरक्षण

लेख - आराधना
उत्क्रमित मध्य विद्यालय अजीजपुर सैरया, मुजफ्फरपुर

बिहार, जहां मनुष्य प्रकृति से जुड़कर जिंदगी जीते हैं। जहां बरगद, पीपल जैसे पेड़ से लेकर पशु पक्षियों तक को हम अपनी आस्था में समाहित किए हुए है । हम सभी ने बचपन में अपनी सुबह की शुरुआत एक छोटी एवं खूबसूरत पक्षी की चहचहाहट से किया होगा। सुबह और शाम को उस चिड़िया की आवाज क्या किसी संगीत से कम थी। लेकिन वक्त के साथ विकास की अंधाधुंध रफ्तार ने हमसे वो सुकून छीन लिया।

नमस्कार, आज मैं इस लेख में बात करना चाहती हूं उसी चिड़िया के बारे में जिसका नाम है *गौरैया* जिसे हम प्यार से बिहारी लहजे में चिरमुन्नी कहते है,सुनते ही अपना सा जुड़ाव लगता है ना।

गाँवों के शांत सुबह से लेकर शहरों की चहल-पहल तक, गौरैया कभी हवा को अपनी खुशनुमा चहचहाहट से भर देती थीं। इन नन्हें पक्षियों के झुंड, बिन बुलाए मेहमान होने के बावजूद स्वागत योग्य, अविस्मरणीय यादें बनाते थे। लेकिन समय के साथ, ये नन्हें दोस्त हमारी जिंदगी से गायब हो गए हैं। कभी बहुतायत में पाई जाने वाली घरेलू गौरैया अब कई जगहों पर एक दुर्लभ दृश्य और रहस्य बन गई है।

बिहार और दिल्ली की राज्य पक्षी होने के बावजूद आज ये अपने अस्तित्व की लड़ाई खुद लड़ रही है और इनके जिम्मेदार है तो सिर्फ एक प्राणी वो हम *मनुष्य*

जिसने आज IUCN की विलुप्तप्राय पक्षी की सूची में इसे शामिल होने पर विवश कर दिया। यूं तो हर वर्ष **20 मार्च** को **विश्व गौरैया दिवस** मनाया जाता है लेकिन क्या इतना काफी है या फिर जरूरत है हर दिन इसके संरक्षण की, इसे अपने समाज में शामिल करने की, अपने घरों में स्थान देने की, ये हमें सोचना होगा। भारत जैसे देश में गौरैया एक साझा जीवनशैली, इतिहास और संस्कृति का प्रतीक है।

गौरैया संरक्षण

अस्तित्व पर संकट क्यों?

इतनी महत्ता के बावजूद आज ये तेजी से लुप्त होती जा रही है। इसके कई कारण हैं, जैसे सीसा रहित पेट्रोल के उपयोग से जहरीले यौगिक पैदा हुए हैं जो उन कीटों को नुकसान पहुंचाते हैं, जिन पर गौरैया भोजन के लिए निर्भर हैं। शहरीकरण ने उनके प्राकृतिक घोंसले के स्थान भी छीन लिए हैं।आधुनिक इमारतों में वे स्थान नहीं होते जहां गौरैया घोंसला बना सकें, जिससे उनके बच्चों को पालने के लिए जगह कम हो गई है। जगह जगह मोबाइल टावर का प्रभाव,जिसका जिक्र एक सिनेमा में किया गया, लेकिन दुःख की बात है कि उसमें भी मारा गया तो पक्षी को ही.....

इसके अलावा, कृषि में कीटनाशकों के इस्तेमाल से कीटों की संख्या में कमी आई है, जिससे गौरैया के भोजन की आपूर्ति पर असर पड़ा है। कौओं और बिल्लियों की बढ़ती मौजूदगी और हरियाली की कमी ने समस्या को और बढ़ा दिया है। इन कारकों और जीवनशैली में बदलाव के कारण गौरैया के अस्तित्व पर संकट आया है।

हम क्या कर सकते हैं?

- प्रकृति प्रहरी के रूप में हम उनके आवास की व्यवस्था कर सकते हैं।
- हर घर में एक बेकार पड़े सामान से घोंसला बना सकतें हैं।
- घर के आसपास मोबाइल टॉवर से परहेज़ कर सकते हैं।
- साथ ही ये जागरूकता भी जरूरी है कि प्रकृति में जो भी व्याप्त है वो हमारे जीवन के लिए आवश्यक हैं।

"आइए मिलकर एक अभियान चलाएं,हर घर गौरैया के लिए एक घोंसला बनाएं"

पेड़ पौधों की दुनिया

लेख - सिद्धांत जी
प्रोन्नत मध्य विद्यालय ईटहरी, बांका

महा विल्वम

प्रकृति प्रहरी के इस अंश में हम चर्चा करने वाले हैं, प्रकृति के ऐसे अनमोल वरदान के बारे में जो हमारे लिए जीवनदायी के साथ-साथ पर्यावरण को संतुलित और स्वच्छ बनाएं रखने में अपनी अहम भूमिका निभाते हैं। ये अनमोल वरदान हैं - **"पेड़-पौधे"।** पेड़-पौधे इसके अलावा हमें शुद्ध वायु, भोजन और विभिन्न औषधियां भी प्रदान करते हैं।

क्या आपने कभी गौर किया है कि तपते शहरों के बीच जब आप किसी घने पेड़ों वाले इलाके से गुजरते हैं, तो अचानक सुकून भरी ठंडक महसूस होती है। यह कोई जादू नहीं, बल्कि ग्लोबल वार्मिंग के खिलाफ पेड़ों का बनाया हुआ 'प्राकृतिक सुरक्षा कवच' है। ये पेड़ न केवल तापमान घटाते हैं, बल्कि पक्षियों और नन्हे जीवों को घर देकर हमारी जैव-विविधता को भी बचाए रखते हैं। इस बात से हम समझ सकते हैं कि बढ़ते ग्लोबल वार्मिंग से बचने के लिए हमारे कवच के रूप में यह पेड़-पौधे कार्य करते हैं। इसके अलावा, पेड़-पौधे जैव विविधता को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, क्योंकि वे अनेक पक्षियों, कीटों और जीवों का आश्रय स्थल होते हैं।

यदि हम विशेष रूप से **बिहार** की बात करें, तो यहाँ की भौगोलिक और जलवायु परिस्थितियाँ काफी विविध हैं। राज्य के उत्तरी हिस्से में हर साल बाढ़ का खतरा बना रहता है, जबकि दक्षिणी क्षेत्रों में कई बार जल की कमी देखने को मिलती है। ऐसी परिस्थितियों में यह आवश्यक हो जाता है कि हम ऐसे पेड़-पौधों का चयन करें जो इन विपरीत परिस्थितियों में भी आसानी से विकसित हो सकें। साथ ही, वे पर्यावरण को स्वच्छ रखने, औषधीय गुण प्रदान करने और लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में भी सहायक हों।इसी संदर्भ में, पेड़-पौधों की दुनिया को समझना और उनके सही उपयोग को अपनाना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता बन गई है।

प्रकृति प्रहरी के इस अंश में हम उस अद्भुत पौधे की चर्चा करेंगे जिसे छात्रों ने अपने परिभ्रमण के दौरान न केवल खोजा, बल्कि उसके संरक्षण का संकल्प भी लिया। यह पौधा है— **"महा विल्वम"।**

महा विल्वम का पत्ता

Aegle marmelos

आप जो ऊपर यह चित्र देख रहे हैं, यह पौधा है **महा विल्वम** , सामान्य बेल से कुछ अलग दिखने वाले इस पौधे को **कृत्यानंद मध्य विद्यालय मलयपुर जमुई** के बच्चों ने जब खोजा और इस पर अध्ययन किया तो उन्हें पता चला कि - "सामान्य बेल के पत्तों में अक्सर तीन दल (पत्तियां) होते हैं, लेकिन 'महा विल्वम' प्रकृति का एक दुर्लभ चमत्कार है। इसमें एक ही डंठल पर 5, 7, 9, 11 और यहाँ तक कि 21 या 27 पत्तियां तक पाई जाती हैं। छात्रों के लिए यह खोज किसी खजाने से कम नहीं थी, क्योंकि यह पौधा जैव-विविधता और हमारी प्राचीन विरासत का एक अनमोल हिस्सा है।"

हमारे विद्यालय के बाल प्रकृति प्रहरियों ने जब इसके विशेषताओं पर अध्ययन किया तो उन्हें पता चला कि , बिहार की बदलती जलवायु और भौगोलिक चुनौतियों के बीच महा विल्वम एक 'मजबूत रक्षक' की तरह खड़ा हो सकता है:

- **जलवायु अनुकूलता:** यह पौधा सूखे और अत्यधिक गर्मी को सहने की अद्भुत क्षमता रखता है, जो इसे दक्षिण बिहार के क्षेत्रों के लिए उपयुक्त बनाता है।
- **हवा का शुद्धिकरण:** महा विल्वम वायुमंडल से कार्बन सोखने और ऑक्सीजन छोड़ने में सामान्य पौधों से अधिक प्रभावी माना जाता है।
- **औषधीय गुणों का भंडार:** इसकी पत्तियां और फल मधुमेह (Diabetes), पाचन तंत्र और श्वसन संबंधी समस्याओं के उपचार में रामबाण माने जाते हैं।

परिभ्रमण के दौरान पौधों का अवलोकन

हमारे जागरूक प्रहरियों ने इस पौधे को चिह्नित कर इसके वैज्ञानिक और आध्यात्मिक महत्व को समझा है। यह खोज हमें सिखाती है कि यदि हम अपनी स्थानीय वनस्पतियों पर ध्यान दें, तो हमें ग्लोबल वार्मिंग जैसी बड़ी समस्याओं के समाधान अपने आस-पास ही मिल सकते हैं।

महा विल्वम को कैसे लगाएं?

इस दुर्लभ उपहार को अपने घर या विद्यालय के बगीचे में लगाने के लिए इन सरल चरणों का पालन करें:

- **मिट्टी का चयन:** यह पौधा दोमट मिट्टी (Loamy Soil) में सबसे अच्छा पनपता है। ध्यान रहे कि जल निकासी (Drainage) अच्छी हो, ताकि उत्तर बिहार जैसी स्थिति में भी जड़ें गलें नहीं।
- **रोपण का समय:** इसे लगाने का सबसे अच्छा समय मानसून (जुलाई-अगस्त) या बसंत ऋतु है।
- **धूप और पानी:** इसे भरपूर धूप की आवश्यकता होती है। शुरुआती 1-2 साल इसे नियमित पानी दें, एक बार बड़ा होने पर यह सूखे (Drought) को आसानी से सह सकता है।
- **जैविक खाद:** साल में दो बार गोबर की खाद या वर्मीकम्पोस्ट का प्रयोग इसकी पत्तियों की संख्या और चमक बढ़ाता है।

महा विल्वम सिर्फ एक वृक्ष नहीं, बल्कि पर्यावरण संतुलन का एक शक्तिशाली माध्यम है। आइए, छात्रों की इस खोज से प्रेरणा लें और अपने परिवेश में ऐसे दुर्लभ और उपयोगी पौधों को जगह दें।

प्रकृति सुरक्षित है, तो हम सुरक्षित हैं!

प्रकृति प्रहरी टीम

एक दिन बिना बिजली

बाल रचना

योगेश तिवारी
एम. आर. एस. उ.
मा. वि. मनियारी,
मुजफ्फरपुर

कल्पना कीजिए कि, रात को आपके घर की बिजली कट जाएं, पंखे बंद हो जाएं, ईंटों के घर आपके घर को तपा दें एवं खाने का इंडक्शन काम ही न करें। एवं यह स्थिति प्रतिदिन हो तो आज का आधुनिक जीवन एक ऐसी प्रतिकूल स्थिति में चला जाएगा जो हमारे शिक्षा, जीवनशैली एवं जीवन में विद्युतीय उपकरण के लाभ एवं महत्व की स्थिति को दयनीय बना देगा।

इन सभी बातों से इस बात पर प्रकाश पड़ता है कि विद्युत हमारे शिक्षा एवं जीवनशैली को विकास के पथ पर अग्रसर करने का प्रमुख आधार है। आज हम अपने जीवन मनोरंजन के लिए टी.वी., मोबाइल, अपने जीवनशैली को बेहतर बनाने के लिए इलेक्ट्रिक वाहन, फ्रिज, पंखा, ए.सी., सिंचाई पंप, बल्ब, कंप्यूटर इत्यादि विद्युत उपकरणों का उपयोग करते हैं एवं संपूर्ण उपकरणों में 90% से अधिक उपकरण विद्युत की वजह से कार्य करते हैं। इससे यह समझ में आता है कि आधुनिक जीवन विद्युत के उपयोग एवं उपभोग पर इतना निर्भर हो चुका है कि शांतिपूर्ण एवं संपन्न जीवनशैली से युद्ध की स्थिति तक प्रत्येक क्षेत्र की कल्पना बिना विद्युत के संभव नहीं है।

आज भारत और दुनिया में सबसे ज्यादा बिजली कोयले को जलाकर बनाई जाती है, जिसका भंडारण सीमित है, चूँकि 80% उपकरण विद्युत से काम करते हैं एवं यह एक बड़ी वैश्विक समस्या है। यहाँ सीमित भंडारण या बिजली का अधिक उपयोग समस्या नहीं है, बल्कि जहाँ विद्युत जैसी सर्वव्यापी साधन कई दशकों से नहीं हैं, वहाँ हमारे छोटे-छोटे विद्युत संबंधी लापरवाहियाँ प्रमुख समस्या है।

हम देखते हैं और पाते हैं कि हम विद्युत के उपयोग में बहुत लापरवाही करते हैं जहाँ हम कभी पंखे को खुला छोड़ देते हैं, दिन में भी बल्ब जलाना, अत्यधिक बल्ब जलाना, विद्युत का अनावश्यक कार्यों में उपयोग करना आदि ऐसे लापरवाही भरे कार्यों को करते हैं, जिसका परिणाम देखने को हमें मिल रहा है, जहाँ विद्युत की कमी हो रही है एवं ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली की कटौती की जाती है। बिहार, वैशाली जिले के महानगर परिक्षेत्र और रोहतासगढ़ पंचायत के कुछ इलाकों में बिजली नहीं है, उत्तराखंड का जैकुनी गाँव के लोग अंधेरे के कारण शाम 6 बजे घरों में दुबक जाते हैं, हिमाचल प्रदेश का तिलंग गाँव 70 वर्षों बाद भी रोशनी से वंचित है, मध्य प्रदेश के आदिवासी, ओडिशा का टिकरपाड़ा गाँव 'विकसित भारत' का लक्ष्य लेने के बाद भी बिजली से अभी तक वंचित हैं और कहीं-न-कहीं इसके जिम्मेदार हम और हमारी विद्युत संबंधित लापरवाही है, जिसका प्रभाव लघु उद्योग पर भी पड़ता है। क्या हम शिक्षित होने के बाद भी विद्युत संबंधी...कार्यों में इतने लापरवाह होते जा रहे हैं कि हम अपनी लापरवाही से अपने घर को तो उजागर करते हैं पर कहीं-न-कहीं हम दूसरों को अंधकार में रहने पर मजबूर कर रहे हैं।

अब हमें बिजली के महत्व को समझने के लिए ग्रीष्म ऋतु का एक दिन याद करना और उसे महसूस करना आवश्यक है। जब गर्मी के दिनों में रात के समय तीन-तीन घंटे बिजली कटती है और पंखे बंद हो जाते हैं, तब हम गर्मी और ईंटों की तपिश से पसीने-पसीने हो जाते हैं और बिजली का महत्व समझते हैं। उस अनुभव के बाद हमें यह आभास होता है कि यदि हम गर्मी की एक रात में मात्र तीन घंटे की बिजली कटौती से इतनी असहनीय पीड़ा झेलते हैं, तो यह सोचने और चिंता करने का विषय है कि पूरे एक दिन बिना बिजली की स्थिति को हम कैसे सहन कर पाएंगे। और वे लोग, जो बिहार, मध्य प्रदेश आदि राज्यों के बिजली-विहीन गाँवों में रहते हैं, शायद इसी स्थिति का सामना प्रतिदिन करते होंगे।

इन सभी बातों से केवल एक ही निष्कर्ष निकलता है कि हमें विद्युत से संबंधित लापरवाहियों को रोकने की आवश्यकता है। ऊर्जा के उत्तम स्रोत को व्यर्थ न करें,
बल्कि सतत ऊर्जा के विकल्प अपनाएँ।

एक दिन बिना बिजली

इको फ्रेंडली विद्यालय

लेख - श्वेता साक्षी (स्वरा)
मध्य विद्यालय हाजीपुर आवासबोर्ड, खगड़ियाँ

म. वि. नोनिया टोला चकला

मध्य विद्यालय नोनिया टोला,चकला,नरपतगंज, अररिया केवल शिक्षा का केंद्र नहीं बल्कि पर्यावरण संरक्षण का प्रेरक उदाहरण बन कर उभरा है । इस विद्यालय के प्रांगण में हरी-भरी घास, रंग-बिरंगे फूल, पेड़-पौधे और सजावटी पौधे हैं जो शिक्षकों और विद्यार्थियों में प्रकृति के प्रति प्रेम और जिम्मेदारी का भाव दिखाते हैं। ऐसा लगता है जैसे यहाँ हर विद्यार्थी केवल ज्ञान अर्जित करने नहीं आते है, बल्कि पर्यावरण के प्रति संवेदनशील और जागरूकता भी लेकर आते हैं और यह सब संभव हो पाया है शिक्षक धीरज सिंह के अथक और लगातार प्रयास से।

धीरज सिंह,वर्ष 2014 से इस विद्यालय में विज्ञान शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। ये उस दौर में यहां पदस्थापित होकर आए थे जब यहां के शिक्षा का स्तर अत्यंत निम्न था, लेकिन सतत प्रयास, नवाचारपूर्ण शिक्षण विधियों और अभिभावकों को शिक्षा के वास्तविक अर्थ समझा कर शिक्षा ही नहीं वरन् विद्यालय का भी काया पलट कर दिया है जिसके कारण आज स्थिति पूरी तरह बदल चुकी है। अब इनके विद्यालय के बच्चे न केवल विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं, बल्कि निरंतर सफलता भी प्राप्त कर रहे हैं। उनकी उपलब्धियाँ यह प्रमाणित करती हैं कि सही मार्गदर्शन, सकारात्मक वातावरण और सामूहिक प्रयास किसी भी बदलाव को संभव बना सकते हैं।

शिक्षा के अलावा इन्होंने विद्यालय को हरित विद्यालय में भी परिवर्तित किया है। इस संदर्भ में बात करने पर धीरज सिंह जी ने कहा कि.. "विद्यालय को इको-फ्रेंडली एवं शैक्षणिक रूप से उत्कृष्ट बनाने की मेरी यात्रा केवल मेरे प्रयासों तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसमें अभिभावकों और बच्चों का अमूल्य सहयोग एक मजबूत आधार के रूप में रहा है। अभिभावकों ने जहाँ हर कदम पर अपना विश्वास, समर्थन और सकारात्मक सहभागिता दी, वहीं बच्चों ने भी पूरे उत्साह,अनुशासन और समर्पण के साथ इन प्रयासों को सफल बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। परिणामस्वरूप बच्चों में सीखने की जिज्ञासा बढ़ी, उनकी उपस्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ और विद्यालय के प्रति उनका जुड़ाव पहले से कहीं अधिक सुदृढ़ हो गया।

यह परिवर्तन अभिभावकों के विश्वास और बच्चों की मेहनत का ही प्रतिफल है। मैं हृदय की गहराइयों से सभी अभिभावकों और अपने प्रिय विद्यार्थियों का आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके सहयोग, समर्पण और विश्वास ने विद्यालय को एक हरित, स्वच्छ, प्रेरणादायक और शैक्षणिक रूप से सशक्त वातावरण प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यही सहयोग मेरी प्रेरणा है और आगे बढ़ने की ऊर्जा भी।"

इतना ही नहीं अभिभावकों और छात्रों के अलावा धीरज सिंह जी के विद्यालय प्रधानाध्यापक ने भी अपना स्नेह, सहयोग और दूरदर्शी मार्गदर्शन समय समय पर देते हैं। वो अपने प्रशासनिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए सीमित संसाधनों एवं वक्त की कमी में रहते हुए भी एक सच्चे अभिभावक और प्रेरणास्रोत के रूप में हर शिक्षक का मनोबल बढ़ाते रहे हैं। प्रत्येक कार्य में उनका सकारात्मक दृष्टिकोण और नवाचार के प्रति प्रोत्साहन भी इन्हें निरंतर कुछ नया करने की प्रेरणा देता रहा है। विद्यालय के सौंदर्यीकरण, बच्चों के बौद्धिक एवं नैतिक विकास तथा समग्र शैक्षणिक वातावरण को सुदृढ़ बनाने के लिए इनके प्रयास भी सराहनीय हैं। विद्यायल को इको फ्रेंडली बनाने में उनके अटूट सहयोग और विश्वास से भी धीरज सिंह जी को सबसे बड़ी शक्ति प्राप्त हुई।

विशेष रूप से विद्यालय प्रांगण को हरियाली एवं इको-फ्रेंडली स्वरूप प्रदान करने में उनके मार्गदर्शन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है,जिसके परिणामस्वरूप आज इनका विद्यालय स्वच्छ,सुंदर,हरित और प्रेरणादायक वातावरण का जीवंत उदाहरण बन गया है।इनके कार्यों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विद्यालय में SCERT, पटना के पूर्व निदेशक सैयद मोइन सर का कई बार आगमन हुआ, जो विद्यालय के साथ साथ सभी के लिए गर्व और प्रेरणा का विषय बना।

उन्होंने विद्यालय में किए गए नवाचारों, शिक्षण पद्धतियों और समर्पण भाव की खुलकर सराहना की। उनके प्रेरणादायक शब्दों ने न केवल इनके आत्मविश्वास को बढ़ाया, बल्कि इन्हें निरंतर उत्कृष्ट कार्य करने के लिए प्रेरित भी किया। वास्तव में, प्रधानाध्यापक एवं वरिष्ठ मार्गदर्शकों के सहयोग, विश्वास और प्रोत्साहन के कारण ही धीरज जी अपने कर्तव्यों का निर्वहन अधिक समर्पण,लगन और प्रभावशीलता के साथ कर पा रहे हैं। यही उनके लिए गर्व, संतोष और सतत आगे बढ़ने की प्रेरणा का आधार भी है।

इन्होंने प्रांगण की हरी-भरी सुंदरता को बनाए रखने और सजावट में पूरी निष्ठा से योगदान दिया है। खासकर हरी घास में विद्यालय का नाम लिखना, इनकी पर्यावरण प्रतिबद्धता का जागरूक और जीवंत उदाहरण है।इनका विद्यालय केवल शिक्षा का मंदिर नहीं, बल्कि प्रकृति और हरियाली का जीवंत उदाहरण भी बन चुका है। विद्यार्थी यहाँ खेलते, सीखते और हरी-भरी सुंदरता के बीच अपने भविष्य का निर्माण करते हैं। यह दर्शाता है कि यदि शिक्षक ठान लें तो हर स्कूल प्रांगण को हरित, सुंदर और इको-फ्रेंडली बनाया जा सकता है

पर्यावरण नायक

लेख - मिथलेश कुमारी
उ. म. वि. डीह गौरीहार सकरा
मुजफ्फरपुर

नरेंद्र कुमार 'नेचर'

नरेंद्र कुमार 'नेचर'
हरिनारायण +2 उच्च विद्यालय, शाहपुर पट्टी, भोजपुर

परिचय: कुछ व्यक्तित्व विशेष न सिर्फ स्वयं के लिए वरन पूरे समाज के लिए प्रेरणादायी स्त्रोत का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। ऐसे ही आज के दौर के एक शिक्षक हैं **नरेंद्र कुमार :-** बक्सर जिले के ब्रह्मपुर प्रखंड निवासी, अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चित्रकार एवं कला शिक्षक। वर्तमान में वे भोजपुर जिले के शाहपुर पट्टी स्थित हरि नारायण इंटर कालेज में ललित कला के शिक्षक के पद पर कार्यरत हैं।

प्रकृति प्रेम : श्री नरेंद्र कुमार में कला की ललक बचपन से ही घर कर चुकी थी, और जब सबसे अलग पहचान बनाने का जज्बा और प्रकृति से अनंत प्रेम हो तो भविष्य उज्ज्वल होने की राह आसान हो जाती है। नरेंद्र जी की प्रारंभिक शिक्षा प्राइवेट स्कूल से हुई और कला में रुचि होने के कारण, मित्र इनसे चित्र बनवाते जिससे इनकी कला में निखार आया। प्रकृति से प्रेम का परिचय उन्होंने स्वयं को 'नेचर' उपनाम देकर प्रस्तुत किया है।

पेंटिंग के माध्यम से संदेश:

नरेंद्र कुमार जी की चित्रकलाओं मे पेड़ों को इंसानी रूप से जोड़ा गया है, जिसका साफ तौर पर संदेश है कि पेड़ों में भी मानव रूपी संवेदनाएं होती हैं, इसीलिए हमें पेड़ों को नहीं काटना चाहिए। इन्होंने पत्थर को बालू से घिसकर, आकृति बना लिथोग्राफी के जरिए प्रिंट निकाले, तो कभी कैनवास पर रंगो का सर्वोत्तम प्रयोग कर के पर्यावरण को बचाने का संदेश दिया। कुछ प्रस्तुतियों में इन्होंने पेड़ को भगवान बुद्ध का रूप दिया है, क्यूंकि बुद्ध को ज्ञान प्राप्ति पेड़ के नीचे ही हुई थी।

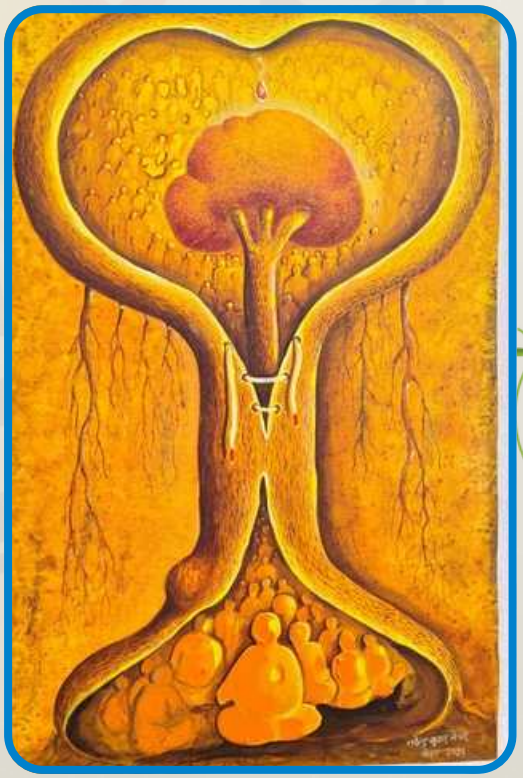

उपलब्धियां: -श्रीमान नरेंद्र की उपलब्धियों में एक से बढ़कर एक नगीने हैं, जिसमें सर्वप्रथम हाल ही में 'बिहार कला पुरस्कार' वर्ष 2025 के लिए उन्हें चयनित किया गया है। कला ,संस्कृति एवं युवा विभाग द्वारा 24 सितंबर वर्ष 2024 को पटना में माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार के द्वारा दिया गया था। विगत वर्षों में भी इन्हें अपनी कला के लिए वित्तीय वर्ष 2023-24 में राधा मोहन पुरस्कार (समकालीन कला/आर्ट फोटोग्राफी हेतु) से अलंकृत किया जा चुका है। उनकी पेंटिंग्स अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नेपाल, बांग्लादेश और ग्रीस जैसे देशों में प्रदर्शित हो चुकी है। माननीय को राज्य स्तर पर (युवा महोत्सव) वर्ष 2015 से भी विभूषित किया जा चुका है। ऐसे कितने ही पुरस्कारों की फेहरिस्त से हमारे पर्यावरण नायक सुसज्जित हैं, जिनकी व्याख्या कम शब्दों में करना असम्भव है।

प्रेरणा बिंदु - नरेंद्र कुमार जी का अपनी कला के प्रति जुझारूपन देखकर यह प्रेरणा ली जा सकती है कि बिहार जैसे राज्य, जहाँ परिस्थितियाँ प्रतिकूल हों, व्यक्ति देश-विदेश में अपनी कला के दम पर स्वर्णिम अक्षरों में अपना नाम दर्ज करा सकता है। पर्यावरण का संरक्षण अपनी कलाओं में दर्शाने से यह प्रतीत होता है, कि उनका पर्यावरण से संबंध आत्मीय है, और यही सोच उनको व्यक्ति विशेष से अलग करती है और हमे भी पर्यावरण के संरक्षण हेतु प्रेरणा देती है।

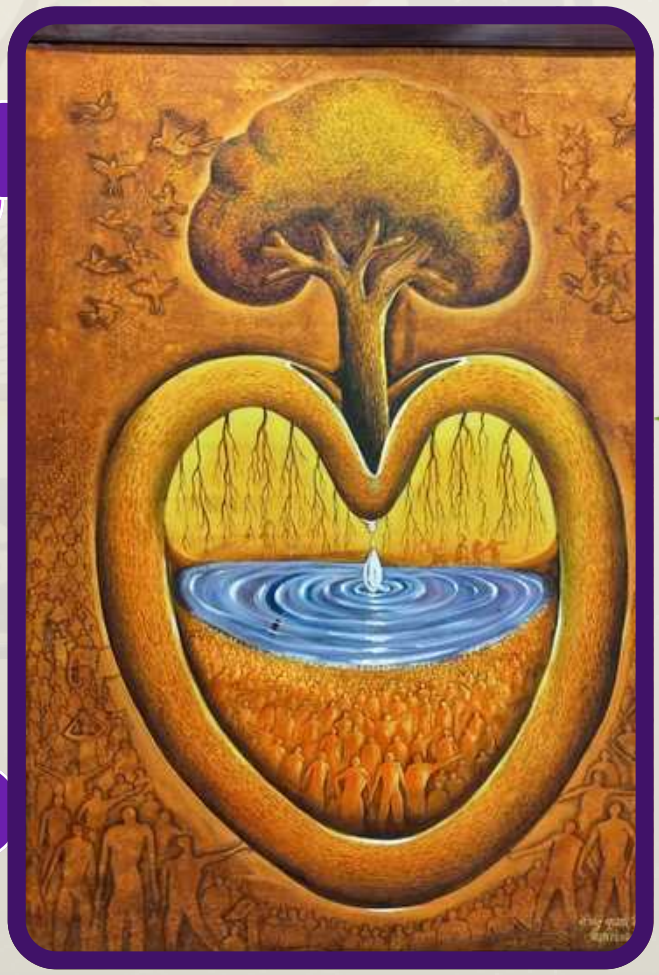

पर्यावरण बनाम पॉलिथीन

लेख - प्रिया कुमारी
उत्क्रमित मध्य विद्यालय औराही, मधेपुरा

नन्हे प्रहरियों की जंग

निवेदिता कुमारी
नव प्राथमिक विद्यालय हरिजन टोला, कलगीगंज, कहलगाव, भागलपुर

हम जानते हैं कि हर काम में शॉर्टकट ठीक नहीं होता , फिर भी हम वही रास्ता चुनते हैं क्योंकि वह हमें सुविधाजनक लगता है। ऐसी ही माया है प्लास्टिक की हमें अफसोस तो है पर इसका मोह ऐसा है कि छूटता हीं नहीं। पर हम भी ज़िद्दी हैं, हार नहीं मानेंगे। कहते हैं कि कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती और इसी कथन को साबित करती हैं प्राथमिक विद्यालय हरिजन टोला, कलगीगंज , कहलगांव , भागलपुर में पदस्थापित शिक्षिका **निवेदिता कुमारी**।

सत्र के समाप्ति का समय था और कक्षा 5 के बच्चों से विदाई का पल भी । पर यह विदाई केवल रस्म नहीं रह गई थी बल्कि एक अनमोल सीख देने का अवसर भी था , ताकि वे जहां भी जाएं समाज और पर्यावरण के लिए मददगार हों ।

फिर देर किस बात की थी कक्षा पांच के फौजी प्लास्टिक से पर्यावरण को बचाने के युद्ध में जुट गए । पहला चरण था हथियार निर्माण जिस हेतु घर में बेकार परे पुराने कपड़े , साड़ियां और दुपट्टे मंगवाए गए और इनसे सुंदर पर्स, झोला, बैग्स आदि बनाने के लिए प्रेरित किया गया । यह गतिविधि किसी जादू से कम न था सभी ने अपने अपने पसंद के रंग भरे और सिलकर तैयार था पॉलिथीन से युद्ध के लिए इको फ्रेंडली हथियार । अब अगली चुनौती थी इसे समाज रूपी युद्ध भूमि में उतरना। इस हेतु सभी नन्हें सैनिको द्वारा बनाया गए इको फ्रेंडली झोले के साथ पूरे गांव में निकले और लोगों को प्लास्टिक से होने वाले नुकसान के बारे में मासूमियत और आत्मविश्वास के साथ समझाया ।

यह अभियान यहीं तक सीमित न रह जाए इस हेतु शिक्षिका निवेदिता कुमारी के प्रयासों से गांव में महिलाओं के समूह को एकत्रित किया गया और उन्हें बच्चों द्वारा निर्मित झोला दिखा कर प्रोत्साहित किया गया कि वे भी पुराने कपड़ों का उपयोग कर ऐसे ही सुंदर और टिकाऊ झोला बनाएं और दैनिक जीवन में पॉलिथीन के जगह इनका उपयोग करें। ऐसा करने से वे वार्यवरण को बचाने के साथ साथ अपने लिए एक रोजगार भी शुरू कर सकती हैं।

नन्हे फौजियों का यह युद्ध अभी भी जारी है और वो भी इस जिद के साथ ही जीत के हीं दम लेंगे। साथ हीं अब यह चुनाव अपना है कि आप इस युद्ध- भूमि में किस ओर से लड़ना चाहते है ?

प्लास्टिक मुक्त अभियान

लेख - उर्मिला कुमारी
उ. मा. वि. चैता साउथ
उजियारपुर, सेसमस्तीपुर

एक प्रयास

हम सभी जानते हैं कि आज प्लास्टिक हमारे लिए कितना हानिकारक है।यह सैकड़ों वर्षो तक अपघटित नहीं हो सकता। इन बोतलों का पुन: उपयोग (Reuse) पर्यावरण संरक्षण और रचनात्मकता का एक बेहतरीन तरीका है। बोतलों को काटकर सुंदर प्लांटर, पेन होल्डर, पक्षियों के लिए दानाघर (bird feeders), या ड्रिप सिंचाई प्रणाली बनाई जा सकती है। इन्हें घर में स्टोरेज कंटेनर या सजावटी वस्तुओं के रूप में अपसाइकिल (Upcycle) करना कचरा कम करने में मदद करता है। इन्हीं DIY में से एक उपयोग और है जिसका प्रयोग आज उच्च माध्यमिक विद्यालय चैता दक्षिणी उजियारपुर के बच्चों ने वेस्ट को बेस्ट बनाकर अपने विद्यालय के पर्यावरण को स्वच्छ और सुंदर बनाने के लिए किया।इस प्रयोग में उन्होंने प्लास्टिक बोतल को इको ब्रिक्स (Ecobricks)का एमएम रूप दिया। प्लास्टिक की बोतलों में सूखे, साफ प्लास्टिक कचरे (रैपर, बैग) को कसकर भरकर बनाई गई टिकाऊ और पुन: प्रयोज्य ईंटें हैं। यह लैंडफिल और समुद्र में प्लास्टिक को जाने से रोकने का एक पर्यावरण-अनुकूल तरीका है, जिसका उपयोग छोटे निर्माण कार्य, जैसे गार्डन बेड, बैठने की बेंच या दीवारें बनाने में किया जाता है।बच्चों ने विद्यालय में क्यारियां बनाने के लिए इसका उपयोग किया। चूंकि विद्यालय में बच्चे बिस्किट, टॉफी, कुरकुरे, चिप्स इत्यादि हमेशा खाते हैं और उसके रैपर को इधर उधर फेंक देते हैं जिससे गंदगी तो फैलती ही है साथ ही यदि कोई जानवर इसे खा जाए तो उनके लिए हानिकारक होता है।

ईको ब्रिक्स उपयोग का मुख्य उद्देश्य प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने और प्लास्टिक को उपयोगी बिल्डिंग ब्लॉक में बदलने का एक सरल, गैर-पूंजीगत तरीका है।इन बोतलों को सीमेंट, मिट्टी या अन्य सामग्रियों के साथ मिलाकर दीवारें, मेज, कुर्सी, या अन्य छोटी संरचनाएं भी बनाई जा सकती हैं। प्लास्टिक बोतल गैर-बायोडिग्रेडेबल होता है। यह ईको ब्रिक्स प्लास्टिक कचरे को जलाने या खुले में फेंकने से रोकता है, जिससे ओजोन परत की रक्षा होती है और नालियां जाम होने से बचती हैं।साथ ही जलीय जीवों की भी रक्षा होती है।

आज का प्रयास "**Waste to Best**" थीम पर आधारित था, जिसमें विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती उर्मिला कुमारी, शिक्षिका **श्रीमती कुमारी भारती** एवं **श्रीमती शिल्पा कुमारी** की उपस्थिति में बच्चों ने समूह में कार्य किया। इस अथक प्रयास के लिए आप सभी को धन्यवाद।

इको क्लब फॉर मिशन लाइफ

लेख - प्रिया कुमारी
उत्क्रमित मध्य विद्यालय औराही , गम्हरिया, मधेपुरा

एक कदम जीवन की ओर

यह उन दिनों की बात है जब मेरी न्युक्ति उत्क्रमित मध्य विद्यालय औराही में बतौर शिक्षिका हुई । मैने पहली बार इस विद्यालय में कदम रखा तो मन उत्साह और सपनों से भरा हुआ था। मुझे लगता था मैं नन्हे नन्हे बच्चों के जीवन में कुछ नया और कुछ सुंदर जोड़ पाऊंगी। लेकिन वास्तविकता ने मेरा स्वागत खामोशी से किया । विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति बहुत कम थी, सुदूर ग्रामीण क्षेत्र होने के कारण यहां साफ - सफाई , पढ़ाई - लिखाई के प्रति जागरूकता की कमी साफ देखी जा सकती थी । शुरूआत में लगा "कहां पोस्टिंग हो गई"? कुछ दिनों तक मन निराश रहा पर फिर लगा " **शून्य के बाद ही तो एक आता है**" । और यहीं से एक एक कर बदलाव की शुरुआत हुई।

हम सभी ने मिल कर योजना बनाई और डोर टू डोर कैंपेन किया। पहला पड़ाव था *"स्वच्छता"*। हमने सभी बच्चों के साथ उनके माता पिता को भी स्वच्छता के प्रति जागरूक किया और वादा लिया कि वे अपने बच्चों को साफ सुथरा तैयार कर प्रतिदिन विद्यालय भेजेंगे । गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में भोजन के पहले साबुन से हाथ धोने की आदत डलवाई गई । धीरे धीरे बदलाव साफ नजर आने लगा। अब वे साफ यूनिफॉर्म में नहा धो कर आने लगे। पर अभी हमें बहुत कुछ करना था । अगला पड़ाव था **विद्यालय में हरियाली...**

विद्यालय का एक सामान्य दिन था , लेकिन आज सोच कुछ अलग थी ।

मैने कहा : "अगर हम मिलकर चाहे तो अपना विद्यालय सुंदर और हरा - भरा बना सकते है ?"

बच्चे : " हां - हां जरूर कर सकते हैं और मज़ा भी बहुत आयेगा ।"

यहीं से शुरू हुआ इको क्लब फॉर मिशन लाइफ का सफर । हमने बच्चों का क्लब बनाया एक ऐसा क्लब जो बन गए "बदलाव के अग्रदूत"। Eco club छपी हुई टीशर्ट और कैप से बच्चों को एक पहचान मिली और जिम्मेदारी का एहसाह हुआ ।

"हम सिर्फ किताब तक सीमित नहीं हैं " -

इस सोच से शुरुआत हुई सफाई अभियान की । बच्चों ने ना केवल विद्यालय को साफ सुथरा बनाया बल्कि गांव में भी जागरूकता फैलाया । " **Say no to plastic**" , "**save water**" , "**save energy**" जैसे संवेदनशील पहलुओं पर काम किया जा रहा है ।

फिर आया एक भावनात्मक पल - "एक पेड़ मां के नाम"

मैने कहा - "इस पेड़ को अपने परिवार की तरह संभालना है।"

इतना कहना था और धीरे - धीरे विद्यालय हरा - भरा हो गया और फिर हमने तैयार किया एक सुंदर "**औषधीय वाटिका**" अब मेरे बच्चे बन गए थे "सेहत के साथी" यह सिलसिला तो निरन्तर जारी रहेगा पर सुकून इस बात का है कि अब मेरे बच्चे सिर्फ विद्यार्थी नहीं हैं बल्कि समाज को भी जागरूक करने वाले **प्रकृति प्रहरी** हैं।

बदलाव की एक सजीव कहानी

लेख - प्रिया कुमारी
उत्क्रमित मध्य विद्यालय औराही, गम्हरिया
मधेपुरा

पोषण वाटिका

रंजना कुमारी
उत्क्रमित मध्य विद्यालय
मानिकपुर, मधेपुरा

यह मेरा सौभाग्य है की मुझे प्रशिक्षण के दौरान इस विद्यालय में कार्य करने का अवसर मिला जिसने मेरे अंदर सरकारी विद्यालय की एक सकारात्मक छाप छोड़ दी और हमेशा प्रभावशाली कार्य करने के लिए प्रेरित किया । यह कहानी है यहां की प्रधानाध्यापिका राजकीय शिक्षक सम्मान से सम्मानित शिक्षिका **रंजना कुमारी जी** की जिनका सदैव एक स्पष्ट सोच रहा है - "**बच्चों को हर क्षेत्र में आगे रखना है**।"

एक समय की बात है जब इस विद्यालय में न तो बाउंड्री वाल था न ही पर्याप्त कमरे और न पर्याप्त शिक्षक इसके बावजूद भी यह विद्यालय पूरे जिला में बेहतरीन संचालन का मिसाल हुआ करती थी। मैने इसे बहुत करीब से देखा है और इसने मेरे मन में बसी सरकारी विद्यालय की धुंधली छवि को शीशे के तरह चमका दिया ।

बात चाहे उपस्थिति की हो या गतिविधियों की हर क्षेत्र में आगे रहने वाले इस विद्यालय में एक कमी स्पष्ट रूप से दिखती थी वह कमी थी ' **हरियाली** '। विद्यालय हरा भरा नहीं होने के कारण अपूर्ण लगता था ।

मैने पूछा : " मैम सबकुछ इतना अच्छा है पर पेड़ पौधे क्यों नहीं हैं ।"

रंजना मैम: "बहुत प्रयास किए लेकिन बाउंड्री वॉल नहीं होने के कारण गाय, बकरी आकर सब नष्ट कर देती है ।"

इसके बावजूद भी मैने देखा वह अपने कार्यालय में कुछ पौधों के गमले रखती थी विद्यालय शुरू होते हीं उसे बाहर बरामदे पे रखा जाता था और पुनः छुट्टी के समय कार्यालय में । यह छोटा सा प्रयास उनके बारे सपनों को दिखाता था। उनसे प्रेरणा लेने वाली बात यह थी कि वह कभी कमियों का रोना नहीं रोती थी बल्कि उस कमी को पूर्ण करने का प्रयास करती थी । समय बीतता गया ...

संघर्ष और लगातार कोशिशों के बाद आखिरकार विद्यालय में भवन निर्माण हुआ बाउंड्री वॉल भी बन गया ।अब हरियाली की उड़ान को रोकने वाला कौन था । इको क्लब के पक्षी जुट गये **मिशन हरियाली** की उड़ान में । आज उसी उत्क्रमित मध्य विद्यालय मानिकपुर में खिलखिला रहा है एक सुंदर और सजीव "**पोषण वाटिका**" जहां बच्चे खुद विभिन्न प्रकार की जैविक सब्जियां उगाते है , खाद बनाना सीखते हैं, सिंचाई करते है और इस वाटिका के देखभाल की पूरी जिम्मेदारी खुद उठाते है ।

सबसे खास बात यह है कि आज पीएम पोषण शक्ति निर्माण योजना के तहत बनने वाली भोजन में भी इन्हीं जैविक सब्जियों का उपयोग किया जाता है । कभी भी बच्चों की थाली में सलाद की कमी नहीं होती । सभी बच्चे गर्व से कहते है - "**यह सब्जियां हमने खुद उगाई है**" ।

इतना ही नहीं यहां हर शनिवार को इको क्लब के अंतर्गत नईं नईं गतिविधियां होती है जैसे - स्वच्छता अभियान, डस्टबिन का उपयोग , पेंटिंग , निबंध प्रतियोगिता आदि। आज यह विद्यालय इतना हरा - भरा और आकर्षक है कि देखने वाला हर व्यक्ति प्रभावित हो जाए।

प्रकृति प्रेमी काव्य संग्रह

एक दिन बिना बिजली

विकास कुमार साव
प्राथमिक विद्यालय
चान्दोडीह,बेलहर
बांका

एक दिवस जब बिजली रूठी, सुख-सुविधा की डोरी टूटी।
ठिठक गया है सब जन-जीवन, थमा हुआ सा लगता आँगन।।

मौन पड़ा है अब तो पंखा, मन में जागी कई आशंका।
शोर न करती कोई स्क्रीन, हुए सभी अब सुर से विहीन।।

अलार्म का भी स्वर है सोया, समय कहीं अँधियारे खोया।
गर्मी की जो तपन बढ़ी है, मुश्किल की यह घड़ी खड़ी है।।

नल हैं सूने मोटर मौन, प्यास बुझाए अपनी कौन।
रसोई भी अब थमी खड़ी है, संकट की यह घड़ी बड़ी है।।

पढ़ाई की भी लौ है मद्धम, कामकाज के रुके कदम।
अस्पतालों की बढ़ी फिकर है, जीवन अब तो बेअसर है।।

किंतु अँधेरा यह सिखलाए, संयम ही पथ दीप जलाए।
सौर ऊर्जा का करें संज्ञान, नव-विकल्प का रखें ध्यान।।

अपनों संग जब हँसी बिखेरी, टूटी तब तो मोह-अँधेरी।
प्रकृति संग अब प्रीत बढ़ाई, सादगी ही है असल कमाई।।

सुविधा का जो लोभ बढ़ा है, निर्भरता का जाल खड़ा है।
चुनौतियों से जो लड़ पाएगा, वही जगत में पथ पाएगा।।

मिट्टी से भी यारी रख

सत्य नारायण सिंह
मध्य विद्यालय नदाँव
बक्सर

मिट्टी से भी यारी रख,
दिल से दिलदारी रख।
चोट न पहुंचे बातों से,
इतनी समझदारी रख।

पहचान हो तेरी हटकर,
भीड़ मे भी कलाकारी रख।
पल भर ये जोश जवानी का,
बुढ़ापे की भी तैयारी रख।

धरती की गोद क़ो,
हरदम हरियाली रख।
प्राण वायु देते है हर पादप
वन उपवन प्रीत प्यारी रख।

नदिया निर्मल आहर पोखर
हर प्राणी जीवों से यारी रख
प्रकृति के गोद मे पठार पर्वत
दृढ़ एकता चट्टानी रख

प्रकृति प्रहरी है हम सब
प्रियतमप्रीत यही अभिलाषा रख।
हे मानव तू सबसे यारी रख
दिल से दिलदारी रख।
मिट्टी से भी यारी रख।

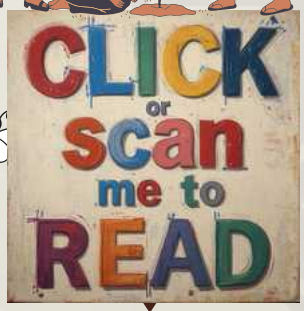

धरती माँ का ये आँगन प्यारा

बबीता कुमारी
रा. उ. म. विद्यालय
महैरेल कन्या अंधराठाढ़ी
मधुबनी

धरती माँ का ये आँगन प्यारा,
हरियाली से सजा है सारा।
पेड़, पौधे, नदियाँ, पर्वत,
इनसे ही जीवन है समृद्ध।
मत काटो इन वृक्षों को यूँ,
ये देते हैं जीवन का सुकून।
शुद्ध हवा और ठंडी छाया,
इनसे ही है जीवन की माया।
नदियों को मत गंदा करो,
जल ही जीवन - इसे समझो।
हर बूँद है अनमोल यहाँ,
इसे बचाना कर्तव्य हमारा।
प्रकृति ने हमको सबकुछ दिया,
बदले में हमसे कुछ भी नहीं लिया।
अब हमारी ये जिम्मेदारी,
रखें सुरक्षित इसकी हरियाली।
आओ मिलकर शपथ ये लें,
धरती को फिर से स्वर्ग बनाएँ।
पर्यावरण की रक्षा करके,
भविष्य अपना उज्जवल बनाएँ।

जैविक खेती: प्रयोग एवं अवसर

लेख - शोभा सिंह
कृत्यानंद मध्य विद्यालय मलयपुर
जमुई

इको फ्रेंडली फार्मिंग

सरकारी विद्यालय में ग्रामीण परिवेश के बच्चे पढ़ते हैं। जिनके परिवार की आर्थिक स्थिति मुख्य रूप से कृषि या मजदूरी पर निर्भर है। जब मैं फसल, उत्पादन और प्रबंधन पाठ पढ़ा रही थी तो मुझे लगा कि क्यों न बच्चों को कुछ ऐसा सिखाया जाए जिससे उनमें प्रकृति और कृषि के प्रति एक नई समझ पैदा हो। इसके लिए मैंने एक क्रियाकलाप को चुना। मैंने तीन पारदर्शी जार लिए और उन्हें मिट्टी से भर दिया। एक जार में गोबर और पत्तों से बनी हुई जैविक खाद डाला, दूसरे जार में रासायनिक खाद (यूरिया) डाला और तीसरे जार में कोई खाद नहीं डाला। तीनों जार में बच्चों ने चना और मूंग के भिगोए गए बीजों को बोया। 3 दिनों बाद बीजों से अंकुर निकल आये। और फिर उनमें पत्तियां आने लगी। इस तरह प्रत्येक दिन पौधों की वृद्धि और उनमें हुए परिवर्तन को बच्चे कॉपी में नोट करते थे। बच्चों ने लगातार 20 दिनों तक पौधों और उसकी वृद्धि, मिट्टी की गुणवत्ता, मिट्टी की जलधारण क्षमता पत्तियों की संख्या आदि को नोट किया, और अपने स्वयं किये हुए शोध से रासायनिक खाद और प्राकृतिक खाद के प्रयोग के अंतर को देखा और सीखा।

जब मैं कक्षा में जार में लगाए गए प्राकृतिक खाद और रासायनिक खाद के पौधों के बारे में बता रही थी तो जाने माने सोशल एक्टिविस्ट श्री सचिव सचदेवा सर जो पूरे भारत में करीब 800 NGO के साथ काम करते हैं, उस समय संयोगवश मेरी कक्षा में आये, उन्होंने जार के प्रोजेक्ट को देखा, बच्चों से कई सवाल पूछे और मेरे कार्य की बहुत सराहना की कि सरकारी स्कूलों में शिक्षक प्रोजेक्ट के ज़रिए इतनी अच्छी पढ़ाई कराते हैं।

पहल. कृत्यानंद मवि मलयपुर में बदला पढ़ाई का तरीका, स्कूल में बनी ग्रीन लैब

पुस्तकों से सिद्धांत लेकर किया शोध, नवाचार से बच्चों में विज्ञान के प्रति बढ़ी जिज्ञासा

सोशल एक्टिविस्ट ने बढ़ाया हौसला

जार में किये प्रयोग से बच्चों ने नवचाई से समझा

पर्यावरण संरक्षण का भी बच्चों को मिला संदेश

नवाचार के लिए मिल चुके हैं कई सम्मान

उसके बाद उन्होंने मेरे स्कूल में प्राकृतिक खेती और रासायनिक खेती को अच्छी तरह से समझाने और अधिक दिनों का शोध करने के लिए एक फार्म बनवाया जिसमें बच्चे खुद फल और सब्जियाँ लगाएँगे, उनका अवलोकन व निरीक्षण करेंगे और दोनों के बीच का अंतर समझ पाएँगे। यानी जो शोध बच्चे छोटे से जार में करके सीख रहे थे, वो अब बड़े खेत में सीखेंगे। उसके बाद बच्चे बहुत ही रुचि के साथ कार्य करने लगे। शोध आगे बढ़ा। बच्चों ने मिट्टी के रंग, गंध, पत्तियों की बनावट, रंग, जड़, तना आदि पर 2 से 3 महीने तक अवलोकन किया और सब कुछ नोटबुक में नोट किया। इस तरह उन्होंने एक लघु शोध के द्वारा स्वयं करके सीखा। तब से लेकर अभी तक विद्यालय के आठवीं से दसवी क्लास के प्रत्येक बच्चे को रासायनिक और प्राकृतिक खाद के अंतर की जानकारी है। बच्चे रोज मिट्टी छूकर महसूस करते, पौधे की वृद्धि और जल धारण क्षमता नापते। अब तक करीब 250 सौ से अधिक बच्चे इस पर काम करके सीख चुके हैं कि रासायनिक खाद तुरंत पोषण देती है लेकिन लंबे समय जैविक खाद धीरे लेकिन स्थायी रूप से मिट्टी को उपजाऊ बनाती है। जैविक खाद में केंचुए जिंदा होते हैं जो किसान के मित्र होते हैं।

रासायनिक खाद का अधिक उपयोग हमारे जलभर और भौमजल को भी खराब करता है। कई बच्चों ने अपने घरों के आंगन, छत, बालकनी में गमले, डिब्बे और बोरे में जैविक खाद का प्रयोग करके सब्जियों को उगाया हैं साथ ही वे अपने अभिभावकों से अपील भी करते हैं कि वे रासायनिक खाद का प्रयोग न करें या कम से कम करें तभी हमारी मिट्टी अच्छी रहेगी। इस तरह 20 दिनों का एक छोटे से जार से शुरू किया हुआ मेरा लघु शोध आज एक बड़े प्रोजेक्ट वर्क में बदल चुका है।

नन्हे प्रकृति प्रहरी

प्रो. म. वि. ईटहरी, फुल्लीडुमर, बाँका

एम. आर. एस. उ. मा. वि. मनियारी

उ. म. वि. लाल पट्टी, सिंहेश्वर

म. वि. बोचहा, मुजफ्फरपुर

मध्य विद्यालय, सैनो जगदीशपुर, भागलपुर

उ.म.वि. कवरिया, दरभंगा

उ.म.वि. सलेमपुर ढाब, मुजफ्फरपुर

नव. प्रा.वि बलरा दुसाध टोली, गोपालगंज

नन्हे प्रकृति प्रहरी

मध्य विद्यालय पिरौछा, गायघाट, मुजफ्फरपुर

उ. म. वि. दयालपुर चंडी, नालंदा

नव. प्रा. वि फ़कीरना, दरभंगा

उ. मा. वि. कोरिया, चांदन, बाँका

आर. के केडिया मा. वि , मुजफ्फरपुर

मध्य विद्यालय, सोडोव, मुंगेर

उ.म.वि. गोपालपुर नेउरा, सरैया, मुजफ्फरपुर

बिहार सरकार की योजना

लेख - कुमार अभिषेक
उत्क्रमित मध्य विद्यालय सलेमपुर ढ़ाब
काँटी, मुजफ्फरपुर

छत पर बागवानी

बिहार सरकार ने शहरी क्षेत्रों में बढ़ती गर्मी और भूमि की कमी से निपटने के लिए '**छत पर बागवानी योजना**' शुरू की है |

- छत पर बागवानी (गमले की योजना)
- छत पर बागवानी (फार्मिंग बेड योजना)

छत पर बागवानी (गमले की योजना) के अंतर्गत 30 गमलों (पौधों सहित) की एकइकाई की लागत लगभग 10 हजार रुपये निर्धारित की गई है। वहीं '**फार्मिंग बेड मॉडल**' की लागत 60 हजार रुपये तय की गई है। दोनों मॉडलोंपर 75 प्रतिशत तक अनुदान उपलब्ध है|

कौन कौन इसका लाभ उठा सकते हैं?

- राजधानी जिले पटना के पटना सदर, दानापुर, फुलवारी,बिहटा एवं खगौल, भागलपुर, गया एवं मुजफ्फरपुर जिले के नगर निगम क्षेत्र में इस योजना का लाभ लिया जा सकता है।
- वैसे व्यक्ति जिनके पास अपना घर हो अथवा अपार्टमेनट में फ्लैट हो अथवा शैक्षणिक संस्थान या किसी भी तरह के अन्य संस्थान जिसके छत पर 300 वर्ग फीट जगह हो, वे इस योजना का लाभ ले सकते है।
- स्वयं के मकान की स्थिति में छत पर 300 sq.ft. खाली स्थल जो किसी भी हस्तक्षेप से स्वतंत्र हो तथा अपार्टमेन्ट की स्थिति में अपार्टमेन्ट की पंजीकृत सोसाइटी से अनापत्ति प्रमाण-पत्र प्राप्त हो।

कितनी लागत कितनी अनुदान:

- फार्मिंग बेड योजना अंतर्गत प्रति इकाई (300 वर्ग फीट) का इकाई लागत 57130 रु० एवं अनुदान 75% (अर्थात 42847.50 रु०) था शेष 14282.50 रूपये लाभार्थी द्वारा देय होगा।
- गमले की योजना अंतर्गत प्रति इकाई लागत 8975 रु० एवं अनुदान 75% (अर्थात 6731.25 रु०) तथा शेष 2243.75 रूपये लाभार्थी द्वारा देय होगा।

कितनी यूनिट तक का लाभ लिया जा सकता हैं

फार्मिंग बेड योजना अंतर्गत व्यक्तिगत/अपार्टमेंट के मकान की स्थिति में अधिकतम 2 इकाई तथा सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थान हेतु अधिकतम 5 इकाई का लाभ दिया जायेगा।

आवेदन कैसे करें-

- **Step-1 :-** उद्यान निदेशालय,कृषि विभाग,बिहार के आधिकारिक वेबसाइट horticulture.bihar.gov.in/ पर Click करें
- **Step2 :-** Click on "Schemes" Tab
- **Step-3:-** Click on "Apply Button" in छत पर बागवानी (फार्मिंग बेड की योजना) या छत पर बागवानी (गमले की योजना)
- **Step-4:-** After payment "submit" the application

लाभ :

1. प्रदुषण में कमी
2. स्वच्छ और सुन्दर वातावरण
3. 100% ताज़ी और पौस्टिक सब्जी और फल

महत्वपूर्ण दिवस

फरवरी 2	विश्व आर्द्रभूमि दिवस
मार्च 3	विश्व वन्य जीव दिवस
मार्च 21	अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस
मार्च 22	विश्व जल दिवस
मार्च 23	विश्व मौसम विज्ञान दिवस
अप्रैल 22	अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी दिवस
मई 22	अंतर्राष्ट्रीय जैविक विविधता दिवस
जून 5	विश्व पर्यावरण दिवस
जून 8	विश्व महासागर दिवस
जून 17	विश्व मरुस्थलीकरण एवं सूखा रोकथाम दिवस
जुलाई 3	अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस
सितम्बर 16	ओजोन परत संरक्षण दिवस
सितम्बर 22	विश्व कार रहित दिवस
अक्टूबर 4	विश्व पशु कल्याण दिवस
अक्टूबर 30	खाद्य अपशिष्ट न्यूनीकरण दिवस
नवम्बर 6	अंतर्राष्ट्रीय वन एवं वृक्ष विनाश रोकथाम दिवस
नवम्बर 19	विश्व शौचालय दिवस
दिसम्बर 11	अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस

क्विज

READY FOR A QUIZ?

1. विश्व गौरैया दिवस कब मनाया जाता है?

A. 5 जून **B.** 20 मार्च **C.** 22 अप्रैल **D.** 16 सितम्बर

2. महा विल्वम पौधे का वैज्ञानिक नाम क्या है?

A. Azadirachta indica **B.** Aegle marmelos

C. Ficus religiosa **D.** Mangifera indica

3. सामान्य बेल के पत्तों में अक्सर कितने दल (पत्तियां) होते हैं?

A. 2 **B.** 3 **C.** 5 **D.** 7

4. विद्युत धारा की SI मात्रक क्या है?

A. वोल्ट **B.** वाट **C.** एम्पियर **D.** ओम

5. "शून्य के बाद ही तो एक आता है" यह पंक्ति इस पत्रिका के किस अध्याय से संबंधित है?

A. प्लास्टिक मुक्त अभियान **B.** इको क्लब फॉर मिशन लाइफ

C. मिट्टी से भी यारी रख **D.** एक दिन बिन बिजली

6. बिहार सरकार की छत पर बागवानी योजना में कितना प्रतिशत तक अनुदान दिया जाता है?

A. 50% **B.** 60% **C.** 75% **D.** 90%

7. छत पर बागवानी योजना निम्नलिखित में से किस जिले में लागू नहीं है?

A. पटना **B.** मुजफ्फरपुर **C.** गया **D.** दरभंगा

8. अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी दिवस कब मनाया जाता है?

A. 5 जून **B.** 22 अप्रैल **C.** 20 मार्च **D.** 16 सितम्बर

9. ओजोन परत संरक्षण दिवस कब मनाया जाता है?

A. 5 जून **B.** 22 अप्रैल **C.** 16 सितम्बर **D.** 1 जुलाई

10. यूरिया का रासायनिक सूत्र क्या है?

A. NH_3 **B.** $CO(NH_2)_2$ **C.** H_2SO_4 **D.** NaCl

CLICK HERE

SCAN ME

10 भाग्यशाली प्रतिभागियों को मिलेगा शानदार उपहार जीतने का सुनहरा अवसर, साथ ही उनकी तस्वीरें हमारे अगले अंक में प्रकाशित की जाएंगी।

प्रकृति प्रहरी (अंक 2) विशेष

प्रकृति प्रहरी के अगले अंक(2) में आने वाले कुछ विषयों को आप सभी के साथ साझा किया जा रहा है :

- E waste : नए युग का कचरा
- भूजल : तेजी से होते दोहन की कहानी
- एक बूंद की यात्रा
- "डिजिटल उपवास: धरती के लिए राहत की सांस"
- नवीकरणीय ऊर्जा : भविष्य की जरूरत या मजबूरी
- इको फ्रेंडली विद्यालय की कहानी
- पर्यावरण नायक
- नन्हे प्रकृति प्रहरी

नए आइडियाज आमंत्रित हैं

CLICK OR SCAN ME TO UPLOAD YOUR IDEA

अगर आप प्रकृति प्रहरी के रूप में अपने विद्यालय, समुदाय या अन्य स्थान पर किए कार्य पर्यावरण संरक्षण से आम जनमानस को जागरूक करना चाहते हैं तो प्रकृति प्रहरी पत्रिका आपको प्रदान कर रहा है वो मंच जहां से हम आपके प्रयास को जन- जन तक पहुंचाएंगे।

आपको यह अंक कैसा लगा? अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें -
https: https://forms.gle/aKuAFNmHqJAYs1Cx5

हमसे जुड़ने के लिए दिए गए लिंक पर क्लिक करें या QR कोड स्कैन करें ।

व्हाट्सएप से जुड़ने के लिए क्लिक करें

ईमेल: prakrtipraharitob@gmail.com
वेबसाइट: www.teachersofbihar.org/prakritiprahari

Facebook group @teachersofbihar

X @teachersofbihar

instagram @teachersofbihar

YouTube @teachersofbihar

Facebook@teachersofbihar
X@teachersofbihar
Instagram@teachersofbihar
YouTube@teachersofbihar

TEACHERS OF BIHAR

पत्रिका संग्रह

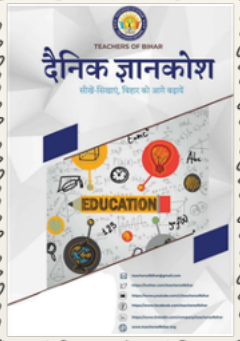

SCAN ME!

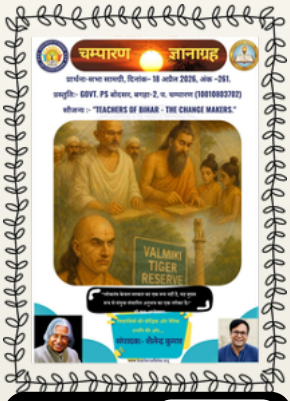

SCAN ME!

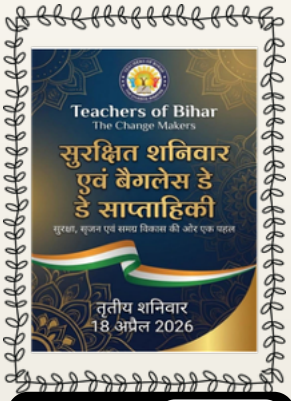

SCAN ME!

SCAN ME!

SCAN ME!

SCAN ME!

SCAN ME!

SCAN ME!

SCAN ME!

SCAN ME!

SCAN ME!

SCAN ME!